

भारत में चाइल्ड वेस्टिंग

प्रलिस के लयः

इंडया चाइल्ड वेस्टंग, [UNICEF](#), [WHO](#), [वशव बैंक](#), [कृषण](#), [WHA](#), [SDG](#)

मेन्स के लयः

इंडया चाइल्ड वेस्टंग

चरचा में क्यो?

हाल ही में [UNICEF \(संयुक्त राष्ट्र बाल कोष\)](#), [WHO \(वशव सवासथय संगठन\)](#), [वशव बैंक समूह](#) ने एक रपौरट जारी की है जसका शीर्षक है- "बाल कृषण का स्तर और रुझान: संयुक्त बाल कृषण अनुमान (JME)", जसमें कहा गया है कवर्ष 2020 में 18.7% भारतीय बच्चे खराब ढोषक तत्त्वों के सेवन के कारण [वेस्टंग से प्रभावत](#) थे।

संयुक्त कृषण अनुमान (JME):

- वर्ष 2011 में JME समूह को सामंजस्यपूर्ण बाल [कृषण](#) के अनुमानों को संबोधत करने हेतु बनाया गया था।
- एजेसी की टीम बच्चों के [स्टंटंग](#), [अधक वज़न](#), [कम वज़न](#), [वेस्टंग](#) तथा [गंभीर वेस्टंग](#) के लय वार्षक अनुमान जारी करती है।
- स्टंटंग, वेस्टंग, अधक वज़न और कम वज़न के संकेतकों के लय बाल कृषण का अनुमान अल्प एवं अतषण के परमाण का वर्णन करता है।
 - UNICEF-WHO-WB संयुक्त बाल कृषण अनुमान अंतर-एजेसी समूह नयमत रूप से प्रत्येक संकेतक के लय व्यापकता और संख्या में वैश्वक एवं कषेत्रीय अनुमानों को अद्यतन करता है।
- वर्ष 2023 के संस्करण के प्रमुख नषिकर्षों में [सभी उल्लखत संकेतकों के लय वैश्वक और कषेत्रीय रुझान](#) के साथ-साथ बौनापन (स्टंटंग) और अधक वज़न वाले बच्चों के लय देश-स्तरीय मॉडल अनुमान शामिल हैं।

रपौरट के नषिकर्ष:

- वेस्टंग:**
 - वशव में वेस्टंग वाले सभी बच्चों की संख्या में से आधी भारत में नवास करती है।
 - वर्ष 2022 में वैश्वक स्तर पर पाँच वर्ष से कम आयु के 45 मलयन बच्चे (6.8%) वेस्टंग से प्रभावत थे, जनमें से 13.6 मलयन गंभीर वेस्टंग से ढीडत थे।
 - गंभीर बौनापन (वेस्टंग) वाले सभी बच्चों में से तीन-चौथाई से अधक एशया में रहते हैं और अन्य 22% अफ्रीका में रहते हैं।
- स्टंटंग:**
 - वर्ष 2022 में भारत में स्टंटंग दर 31.7% थी, जो एक दशक पूर्व वर्ष 2012 में 41.6% थी।
 - वर्ष 2022 में वशव भर में पाँच वर्ष से कम उमर के करीब 148.1 मलयन बच्चे स्टंटंग से प्रभावत थे।
 - लगभग सभी प्रभावत बच्चे एशया (वैश्वक हससेदारी का 52%) अफ्रीका के थे।
- अधक वज़न:**
 - पाँच वर्ष से कम उमर के 37 मलयन बच्चे [वशव स्तर पर अधक वज़न](#) वाले हैं इनमें वर्ष 2000 के बाद से लगभग चार मलयन की वृद्धा हुई है।
 - वर्ष 2012 में 2.2% की तुलना में वर्ष 2022 में भारत में अधक वज़न का प्रतशत 2.8% था।
- प्रगतः**
 - वर्ष 2025 [वशव सवासथय सभा \(WHA\)](#) के वैश्वक ढोषण लक्ष्यों और संयुक्त राष्ट्र द्वारा अनवार्य [सतत वकस लक्षय 2.2](#) तक ढहुँचने के लय अपर्याप्त प्रगतकी है।
 - WHA के वैश्वक ढोषण लक्षय हैं:**
 - 5 वर्ष से कम उमर के बच्चों में बौनापन को 40% तक कम करना।

- 19-49 वर्ष की आयु वर्ग की महिलाओं में एनीमिया के प्रसार को 50% तक कम करना ।
- कम वजन वाले बच्चों में 30% की कमी सुनिश्चित करना ।
- सुनिश्चित करें कि बचपन में अधिक वजन न बढ़े ।
- प्रारंभ के छह माह में केवल स्तनपान की दर को कम-से-कम 50% तक करना ।
- बचपन में वेस्टिंग(कद के अनुपात में वजन का कम होना) को कम करके 5% से कम रखना ।
- सभी देशों में से केवल एक-तहिाई देश वर्ष 2030 तक स्टंटिंग (आयु के अनुपात में कद का कम होना) से प्रभावित बच्चों की संख्या को आधा करने के लिये सही दिशा पर कार्यरत हैं और लगभग **एक-चौथाई देशों के लिये** प्रगतिका आकलन **संभव** नहीं हो पा रहा है ।
- यहाँ तक कि कम देशों में अधिक वजन के लिये वर्ष 2030 के 3% प्रसार के लक्ष्य को प्राप्त करने की अपेक्षा है, वर्तमान **संभव देशों में से केवल एक ही सही दिशा पर है ।**
- लगभग आधे देशों के लिये वेस्टिंग (कद के अनुपात में वजन का कम होना) के लक्ष्य की दिशा में प्रगतिका आकलन संभव नहीं है ।

सफ़ारिशें

- गंभीर वेस्टिंग से पीड़ित बच्चों को जीवित रहने के लिये **शीघ्र निदान तथा समय पर उपचार एवं देखभाल** की आवश्यकता होती है ।
- **वर्ष 2030 तक स्टंटिंग वाले बच्चों की संख्या को 89 मिलियन तक कम करने के वैश्विक लक्ष्य को प्राप्त के लिये** अत्यधिक गहन प्रयासों की **आवश्यकता है ।**
- कुछ क्षेत्रों में उपलब्ध आँकड़ों में अंतर वैश्विक लक्ष्यों की दिशा में प्रगतिका सटीक आकलन करना चुनौतीपूर्ण बना देता है । इसलिये देश, क्षेत्रीय तथा वैश्विक स्तर पर बाल कुपोषण पर प्रगतिका निगरानी और विश्लेषण करने के लिये नियमित डेटा संग्रह महत्वपूर्ण है ।

कुपोषण क्या है?

- **परिचय:**
 - कुपोषण किसी व्यक्ति में पोषक तत्वों के सेवन में **कमी, अधिकता या असंतुलन** को संदर्भित करता है ।
 - कुपोषण शब्द शर्तों के दो व्यापक समूहों को शामिल करता है ।
 - पहला है 'अल्पपोषण'- जिसमें स्टंटिंग (उम्र के हिसाब से कम लंबाई), वेस्टिंग (ऊँचाई के हिसाब से कम वजन), कम वजन (उम्र के हिसाब से कम वजन) और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी या अपर्याप्तता (महत्वपूर्ण वटामिन और खनिजों की कमी) शामिल हैं ।
 - दूसरा है अधिक वजन मोटापा और आहार से संबंधित **गैर-संचारी रोग** (जैसे- **हृदय रोग, स्ट्रोक, मधुमेह और कैंसर**) ।
 - बचपन में अधिक वजन की स्थिति तब होती है जब भोजन और पेय पदार्थों से बच्चों की कैलोरी की मात्रा उनकी ऊर्जा आवश्यकताओं से अधिक हो जाती है ।
- **कुपोषण से संबंधित भारतीय पहल:**
 - **मध्याह्न भोजन (MDM) योजना**
 - **पोषण अभियान**
 - **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA), 2013**
 - **प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY)**
 - **एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना**
 - **आकांक्षी ज़िला कार्यक्रम**

स्रोत: डाउन टू अर्थ